महाव्रत और अणुव्रत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

व्रत का अर्थ होता है संकल्प लेना। संकल्प चाहे छोटा हो या बड़ा यह एक प्रकार की प्रतिज्ञा हो जाती है। जिसे पूरा करना व्रत धारण करने वाले का कर्त्तव्य बन जाता है। महाव्रत और अणुव्रत संकल्प की दृष्टि से व्याख्येय है। व्रत छोटा या बड़ा नहीं होता। पालनकर्त्ता यदि निरपवाद उसका पालन करता है तो वह महाव्रत हो जाता है और यदि कुछ छूट के साथ उसका पालन किया जाता है तो वह अणुव्रत हो जाता है। महाव्रत मुनियों के लिए है और अणुव्रत गृहस्थों के लिए है। जैन धर्म के सम्बन्ध में महाव्रत और अणुव्रत का विधान किया गया है। महाव्रत पाँच हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। जैन धर्म का मूलाधार ही अहिंसा है। हिंसा कभी भी धर्म नहीं हो सकती। इस विराट् विश्व में जितने भी प्राणी हैं, वे चाहे छोटे हों या बड़े हों, पशु हों या मानव हों, सभी जीवित रहना चाहते हैं, कोई भी मरना नहीं चाहता। अहिंसा में सभी प्राणियों के कल्याण की भावना निहित है। त्रस, स्थावर सभी भूतनिकायों का मंगल करने वाली अहिंसा है। हिंसा का प्रमुख कारण मानव का अज्ञान है। तत्त्व से अनभिज्ञ होने के कारण मनुष्य विषय, कषाय आदि मानसिक दोषों से पीड़ित है। इसलिए वह हिंसात्मक प्रवृत्ति करता है। भगवान् महावीर ने छह जीवनिकायों की प्ररूपणा की है। इनमें पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, वनस्पति और त्रस की प्ररूपणा की गयी है। जब तक जीव का ज्ञान नहीं होता, तब तक हिंसा से छुटकारा नहीं मिल सकता। अतः सभी प्राणियों में जीव दया का भाव अहिंसा है। द्वितीय महाव्रत के रूप में सत्य की गणना की गयी है। जैसा हुआ है, वैसा ही कहना सत्य का सामान्य लक्षण है, परन्तु अध्यात्म मार्ग में स्व पर अहिंसा की प्रधानता होने से हित व मित वचन को सत्य कहा जाता है। मुनि सत्य का आजीवन पालन करने का वचन लेता है। सामान्यतया स्तेय से तात्पर्य है चोरी और अस्तेय का तात्पर्य है चोरी न करना। किसी की निन्दा करना, किसी के दोषों को देखना, चुगली करना, अन्य जीवों के प्राणों का अपहरण करना, दूसरे के अधिकार को छीनना, किसी की भावना को ठेस पहुंचाना, किसी के साथ अन्याय करना आदि सभी स्तेय के अन्तर्गत आते हैं। अस्तेय महाव्रत के साधक

को इन सभी प्रवृत्तियों से अपने को बचाना होता है। स्तेय के लिए 'अदत्तादान' शब्द का प्रयोग हुआ है। बिना दी गयी वस्तु को स्वयं की इच्छा से उठाना, स्वामी की अनुमति के बिना किसी भी वस्तु को ग्रहण करना व उसका उपभोग एवं उपयोग करना अदत्तादान है। इसे ही चोरी कहते हैं। एकमहाव्रत के रूप में जब कोई साधक इस महाव्रत को स्वीकार करके उसका आचरण करता है तब वह बिना दिए किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करता। महाव्रतों से सम्बन्धित ब्रह्मचर्य महाव्रत का विशेष महत्त्व है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है–आत्मविद्या या आत्मविद्याश्रित आचरण। ब्रह्मचर्य के तीन अर्थ है–वीर्य रक्षण, आत्म–रमण और विद्याध्ययन। केवल वीर्यरक्षा या जननेन्द्रिय विषयक संयम ब्रह्मचर्य का अधूरा अर्थ है। ब्रह्मचर्य का विधेयात्मक रूप तो अपनी आत्मा या परमात्मा की उपासना में लगना है। वीर्यरक्षा करना, योग साधना करना, विद्याध्ययन करना, किसी विशाल ध्येय को सामने रखकर या निश्चित करके तदनुसार आचरण करना–ये सब आत्मोपासना के लिए सहायक ब्रह्मचर्य के विधायक रूप हैं। मुनि जीवन भर ब्रह्मचर्य महाव्रत के पालन का संकल्प लेता है। अपरिग्रह महाव्रत को जानने के लिए परिग्रह को जानना आवश्यक है। परिग्रह का अर्थ है–ममत्व बुद्धि से किसी वस्तु का ग्रहण करना। परिग्रह का अर्थ है– किसी वस्तु का समस्त रूप से ग्रहण करना, अथवा मूर्च्छावश जिसे ग्रहण किया जाता है या अपनेपन–मेरेपन के भाव से यह 'मेरी है', इस बुद्धि से जिसे ग्रहण किया जाय, उसे परिग्रह कहते हैं। भगवान् महावीर ने मूर्च्छा को ही परिग्रह कहा है। परिग्रह महाभय का हेतु है। अपरिग्रही पदार्थों में ममत्व नहीं करता। पांचों महाव्रत एक दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं एक भी व्रत की विराधना करने वाला अन्य की विराधना करता ही है। परिग्रह रखने वाला हिंसा से बच नहीं सकता और हिंसा करने वाला परिग्रह से नहीं बच सकता। इस प्रकार पांच महाव्रतों के विवेचन में मानव धर्म के प्राणस्वरूप अहिंसा महाव्रत का प्राधान्य दृष्टिगोचर होता है। इसी की विशुद्धि के लिए सभी आचार विचार का प्रतिपादन हुआ है। भारतीय संस्कृति में इन पांचों महाव्रतों का विशिष्ट स्थान है। अणुव्रत गृहस्थों के लिए है। अणुव्रत का मतलब होता है छोटे–छोटे संकल्प। जिनका पालन मानव अपने जीवन में कर सकता है। महाव्रत यतियों और संन्यासियों के लिए है। इनके पालन में किसी भी प्रकार की त्रुटि नहीं होनी चाहिए। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह पांच महाव्रत है। मुनियों को

निरतिचार पूर्वक पालन करना पड़ता है। गृहस्थ अपने लौकिक जीवन के निर्वाह के लिए पूर्ण रूप से इनका पालन नहीं कर सकते, इसलिए इनका पालन करने के लिए गृहस्थों को छूट है। इसलिए इसे अणुव्रत कहा जाता है। यह हर वर्ग के लिए है। शिक्षक, कृषक, व्यापारी इत्यादि समाज में जितने भी वर्ग है सभी वर्गों के लिए अणुव्रत है। जिसका पालन यदि मनुष्य करता है तो उसका जीवन निरापद रूप से व्यतीत हो सकता है। अणुव्रत आंदोलन नैतिक मूल्यों का दस्तावेज है। जिसमें मानवता का कल्याण सन्निहित है। जैन धर्म में संत और श्रावक महाव्रत और अणुव्रत का पालन करते है। इसके द्वारा वे अपने जीवन को सन्मार्ग पर लाकर मोक्ष प्राप्त करने की कामना करते है।